अखिल भारतीय कामगार महिला समन्वय समिति (सीटू)

पत्रिका

अक्टूबर 2007 केवल सदस्यों के लिए मूल्य 3 रूपए

आइसा द्वारा देशव्यापी हड़ताल

पंजाब में 'रेल रोको' के दौरान
आंगनवाड़ी कार्यकर्ता

10 जुलाई को देशभर में हुई हड़ताल

बहुत समय से लम्बित मांग की ओर सरकार के ढुलमुल रवैये को देखते हुए देशभर की सैंकडों हजारों आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं ने 10 जुलाई 2007 को आंगनवाड़ी केंद्रों को बंद कर विरोध प्रदर्शनों में जोशो खरोशों से भाग लिया। देशभर में करीब आठ लाख आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने इस दिन अपने कंद्रों को बंद रखा और प्रदर्शन, जूलूस, रैली, रास्ता रोको, रेल रोको पुतले जलाओ इत्यादी विभिन्न कार्यवाहियों के ज़रिए प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए आश्वासनों को पूरा न करने पर रोष जताया। बहुत से राज्यों में उन्हें पुलिस का दमन भी झेलना पड़ा।

अखिल भारतीय आंगनवाड़ी सेविका एवे सहाकयका फैडरेशन प्रत्येक वर्ष 10 जुलाई को अखिल भारतीय मांग दिवस के रूप में मनाती है, इस वर्ष भी यूपीए सरकार की नीतियों विरूद्ध इस दिन को अखिल भारंतीय हड़ताल के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। प्रधान मंत्री द्वारा दिए गए आश्वासनों को पूरा न करने पर हड़ताल का आहवान किया गया, जिसमें आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भरपूर रोष प्रदर्शन करते हुए भाग लिया।

आंगनवाड़ी कर्मचारियों की मुख्य मांगें थीं :–

1) आईसीडीएस को स्थाई सेवा में रूपांतरित किया जाए और सभी रिहायशी स्थानों पर आंगनवाड़ी केंद्र खोले जाएं।
2) आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं की सेवाओं को ग्रेड 3 व ग्रेड 4 के कर्मचारियों के रूप में नियमित किया जाए। इसके लम्बित रहने तक
3) आंगनवाड़ी कर्मचारियों का वेतन बढ़ाकर सेविकाओं और सहायिकाओं को क्रमशः 3000रू तथा 2000रू दिए जाएं।
4) सभी आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं का मानभत्ता उपभोक्ता सूचकांक के साथ जोड़ा जाए।
5) प्रोविडेंट फंड, ग्रेच्युटी, पेंशन, ईएसआई इत्यादी सामाजिक सुरक्षा लाभ उपलब्ध कराए जाएं।
6) 58 वर्ष की उम्र पर रिटायरमेंट के समय सेविकाओं को 1,00,000रू व सहायिकाओं को 50,000रू का एक्स ग्रेशिया दिया जाए।

यद्यपि प्रधानमंत्री आंगनवाड़ी कर्मचारियों को सरकारी कर्मचारी बनाना नही चाहते, परन्तु फिर भी उन्होनें सरकार के आईसीडीएस को सर्वव्यापी बनाने के वादे को दोहराया और सहमत भी हुए कि आईसीडीएस द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली सभी सेवाएं स्थाई तौर पर होनी चाहिए, और यह भी माना कि आंगनवाड़ी कर्मचारियों को भुगतान किया जाने वाला वेतन बहुत ही कम है। उन्होनें भरोसा दिलाया कि सरकार आंगनवाड़ी कर्मचारियों का वेतन बढ़ाएगी और महिला एवं बाल विकास मंत्री द्वारा *'विदाई तोहफा'* दिए जाने का भी भरोसा दिलाया।

परन्तु अभी तक इन आश्वासनों को अमल में नही लाया गया। संसद में सवाल किए जाने पर महिला और बाल विकास मंत्री अभी तक वही दोहरा रहे हैं कि सरकार वेतन दोगुणा कर चुकी है। परन्तु इसे दोगुणा हुए पांच वर्ष से अधिक समय बीत चुका है। आज, जब सभी आवश्यक वस्तुओं के दाम आसमान छू रहे हैं, केंद्रीय सरकार, आंगनवाड़ी कर्मचारियों के वेतन में एक भी पैसा बढ़ाने को तैयार नही है। वाम सांसदों द्वारा लगातार डब्ल्यूसीडी मंत्रियों को याद दिलाए जाने के बावजूद भी केवल और केवल आश्वासनों के अलावा और कुछ नही मिलता। *'संसद मार्च'* में भाग लेकर गिरफ्तारियां देने वाले दस हजार आंगनवाड़ी कर्मचारियों के नारे भी सरकार को कुम्भकरणी नींद से जगा नही सके। सरकार के इस रवैये ने ही आंगनवाड़ी कर्मचारियो को 10 जुलाई 2007 को हड़ताल पर जाने के लिए उकसाया।

यद्यपि आइफा ने पहले बहुत सी अखिल भारतीय हड़तालों का आयोजन किया है, और केंद्रीय ट्रेड यूनियन संगठन के बहुत संयुक्त कार्यक्रमों में भाग भी लिया है, परन्तु सभी राज्य कमेटियों की रिपोर्टों में यह रेखांकित किया गया कि इस हड़ताल में आंगनवाड़ी कर्मचारियों की भागीदारी और विभिन्न प्रकार के विरोध प्रदर्शन दर्शनीय थे।

जम्मू और कश्मीर के आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने पहली बार अखिल भारतीय आंगनवाड़ी सेविका एव सहायिका फैडरेशन (आइफा) की हड़ताल में हिस्सा लिया। दस हजार से अधिक आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने शेर–ए–कश्मीर पार्क में एकत्र होकर लाल चौक की ओर मार्च किया। जब वे मौलाना आज़ाद रोड पर पहुंचे, पुलिस ने टीयर गैस के गोले फेंके और बुरी तरह लाठी चलाई। पुलिस ने उन्हें तितर – बितर करने के लिए जल तोपधार का भी इस्तेमाल किया, जिसमें 200 से अधिक आंगनवाड़ी कर्मचारी घायल हो गए और 20 से अधिक आंगनवाड़ी कर्मचारियों को गिरफ्तार कर लिया गया, जिसमें यूनियन की अध्यक्षा हसीना सोफी भी शामिल थीं। यूनियन की महासचिव मैमूना नाज़की और लगभग अन्य

35 को अस्पताल में भर्ती करवाया गया। बहुत से आंगनवाड़ी कर्मचारी अचेत अवस्था में थे। इस हमले का संचालन पूर्वी श्रीनगर के एस पी के नेतृत्व में और उन्हीं के निर्देशों पर मर्दाना पुलिस द्वारा हो रहा था। पुलिस ने आंगनवाड़ी कर्मचारियों के साथ गाली गलौच व दुर्वव्यवहार किया। आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने बहादुरी से उनका सामना किया, और एक भी आंगनवाड़ी कर्मचारी ने कदम पीछे नही हटाए। उन्होंने अन्य ट्रेड यूनियन साथियों के साथ सड़क पर धरना दिया और अपने नेताओं को छोड़ने की मांग की। पुलिस ने शाम के समय गिरफ्तार किए हुए नेतृत्व मंडल को रिहा कर दिया। नेताओं द्वारा राज्य महिला आयोग के साथ एक केस दर्ज करने का निर्णय लिया गया। 14 जुलाई को ट्रेड यूनियनों द्वारा एक कड़ा विरोध प्रदर्शन किया गया, जिसमें उन्होंने शांतिपूर्वक धरना दे रहे आंगनवाड़ी कर्मचारियों पर पुलिस द्वारा किए गए अमानुषिक हमले और इसके जिम्मेदार, मुख्य रूप से एसपी के विरूद्ध न्यायिक कदम उठाने की मांग की।

पंजाब में पटियाला, फतेहगढ़साहिब, संगरूर, लुधियाना, जालन्धर, रोपड़, डेराबस्सी मोहाली, नवां शहर, तरनतारन, रईया, अमृतसर, मोगा, फरीदकोट, बुढलाडा, मानसा, होशियारपुर, गुरदासपुर इत्यादी सभी परियोजनाओं में आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने पुलिस की लाठियों को झेलते हुए हडत्रताल को सफल बनाया। पटियाला, लुधियाना, संगरूर, फ़तेहगढ़ साहिब, पटियाला और राजपुरा इत्यादि केंद्रों में 'रेल रोको' का आयोजन किया। राज्य के अन्य केंद्रों में भी 'रास्ता रोको' आयोजित किया गया। ग्राज्य में लगभग सभी परियोजनाओं में सरकार के पुतले जलाए गए।

आसाम में राज्य के 27 जिलों में 16 जिलों में पूर्ण रूप से हड़ताल की गई। अन्य चार जिलों में हड़ताल का प्रभाव आंशिक रहा क्योंकि जिले की कुछ परियोजनाओं ने हड़ताल में भाग नही लिया। कामरूप, बारपेटा इत्यादी में जिले स्तरीय प्रदर्शनों में हजारों आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भाग लिया; अन्य 13 जिलों में बाल विकास परियोजना के दफ्तरों पर पिकेटिंग और प्रदर्शन हुए। पुलिस काफी संख्या में मौजूद थी, परन्तु आंगनवाड़ी कर्मचारियों को विरोध करने से नही रोक सकी। हड़ताल की विभिन्न गतिविधियों में जिले से लगभग 25,000 आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भाग लिया।

मध्य प्रदेश में रीवा में हजारों आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने यूपीए सरकार का पुतला कंधों पर उठाकर गलियों से मार्च किया; रास्ता बंद कर दिया और सरकार का पुतला फूंका, जिससे पुलिस ने उन सभी को गिरफ्तार कर लिया। ऐसे ही कार्यक्रम और धरने ग्वालियर, भोपाल, जबलपुर इत्यादी जिलों के मुख्यालयों पर हुए। अनूपपुर, सीधी, सिहर, मोरेना, सतना इत्यादी जैसे जिलों में, जिसमें हाल ही में यूनियन का गठन हुआ है, ने भी हड़ताल में हिस्सा लिया।

हरियाणा में 50 प्रतिशत आंगनवाड़ी केंद्र बंद थे और लगभग 15,000 आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने विभिन्न जिलों में 'रास्ता रोको' में हिस्सा लिया। यूनियन की राज्य कमेटी, सीटू और सर्व कर्मचारी संघ द्वारा हड़ताल के लिए सर्कल बैठकें कर एक विशाल अभियान चलाया गया। राज्य में हड़ताल में बड़ी संख्या में भाग लेकर आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने निष्क्रमित किए गए नेताओं के मुंह पर एक करारा तमाचा जड़ा है, जोकि वर्तमान समय में सरकारी प्रतिनिधि बनकर हड़ताल को 'राजनैतिक गतिविधि' और गैरकानूनी बताकर आंगनवाड़ी कर्मचारियों को हड़ताल में शामिल होने से रोकने का प्रयत्न कर रहे थे।

हिमाचल प्रदेश में पूर्ण हड़ताल हुई और जिला स्तरीय प्रदर्शन हुए। **राजस्थान** में यद्यपि यूनियन की सदस्यता एक हजार से भी कम है, फिर भी हजारों आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने हड़ताल में भाग लिया। हजारों आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने सीकर, अल्वर, झुंझुनू, उदयपुर, बीकानेर, चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़ और जयपुर इत्यादी में प्रदर्शन किया। जिन जिलों में यूनियन नही भी हैं, उन जिलों में भी अच्छी संख्या में आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने हड़ताल में हिस्सा लिया। **महाराष्ट्र** में हजारों आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने अपने केंद्र बंद

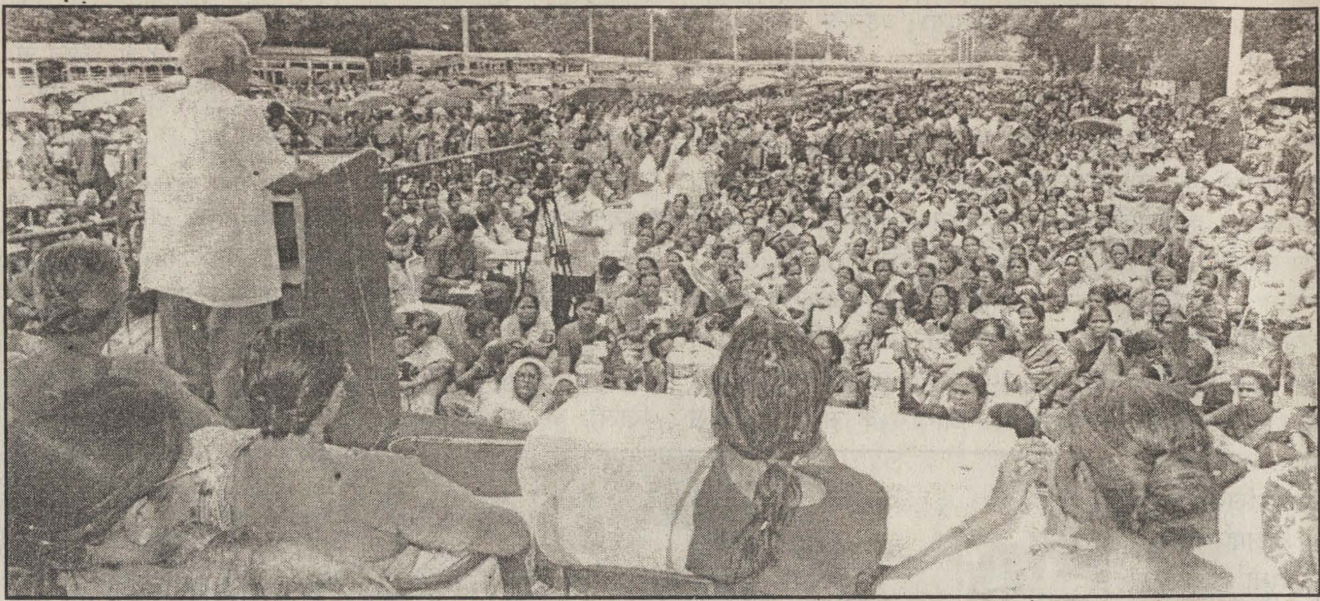

इत्यादी में पूर्ण रूप से हड़ताल हुई; पटना, भागलपुर, बेगुसराय, समस्तिपुर इत्यादी में आंशिक रूप से हड़ताल हुई। **छत्तीसगढ़** में जिला स्तरीय धरने हुए जिसमें हजारों आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। जिले में राजहरा, रायपुर और अन्य स्थानों पर भी हड़ताल की गई। झारखंड में भी हजारों की संख्या में आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया और जिला मुख्यालय पर बैठक हुई।

पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, केरल, आंध्र प्रदेश और **तमिलनाडु** में पूर्ण रूप से हड़ताल हुई। कर्नाटक में भी लगभग पूर्ण हड़ताल हुई। लगभग 30,000 आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने कलकत्ता में रानी रशमोनी रोड पर रैली विशाल रैली निकाली; पूरी सड़क बंद कर दी गई । **त्रिपुरा** में विभागी स्तरीय प्रदर्शन हुए। केरल में जिला और परियोजना स्तरीय प्रदर्शन हुए और पुतले जलाए गए। आंध्र प्रदेश में सभी मंडल, परियोजनाओं, ओर जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शन, पुतले जलाना इत्यादी कार्यवाहियां आयोजित की गईं। काडपा जिला, मुख्य मंत्री का जिला में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने आंगनवाड़ी कर्मचारियों को हड़ताल पर जाने से रोकने के प्रयत्न किए। निज़ामाबाद में सैकडों कार्यकर्ता गिरफ्तार हुए। आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने पुलिस स्टेशन के सामने धरना दिया और पुलिस पर अपने साथियों को छोड़ने के लिए दबाव बनाया। वारांगल जिले में पुलिस ने आंगनवाड़ी कर्मचारियों पर बुरी तरह लाठी भांजी जिससे उनमें से बहुत से घायल हुए। कुछ का फ्रैक्चर हुआ और उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ा। बहुत से अन्य जिलों में भी धरने दिए गए और लगभग सभी जिलों के मुख्यालयों के रास्ते रोके गए। बहुत से परियोजना दफ्तरों के सामने भी प्रदर्शन हुए और धरने दिए गए। **कर्नाटक** में पुतले जलाना, विरोध प्रदर्शन और धरने इत्यादी हुए।

हड़ताल का संतोषजनक पहलू यह था कि दूसरी यूनियनों के सदस्य आंगनवाड़ी कर्मचारी और ऐसे आंगनवाड़ी कर्मचारी जो किसी भी यूनियन के सदस्य नही हैं, ने भी हड़ताल में भारी संख्या में भाग लिया। आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने न केवल अपने केंद्र बंद किए बल्कि प्रदर्शनों में भाग लेने के लिए पहले से अधिक संख्या में बाहर आए। अन्य महत्वपूर्ण पहलू आंगनवाड़ी केंद्रों के क्षेत्रों में जनसाधारण और लाभार्थियों का समर्थन था। अधिकतर राज्यों में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने क्षेत्र में जन बैठकों का संचालन किया, मुख्य रूप से लाभार्थियों की अपनी मांगों का वर्णन कर उनका समर्थन पाने के लिए। बहुत से राज्यों में लाभार्थियों ने संघर्षरत आंगनवाड़ी कर्मचारियों के लिए हार्दिक समर्थन जताया। लाभार्थियों और अन्यों द्वारा आईसीडीएस को स्थाई बनाने की मांग को सराहा गया।

सभी राज्यों में सीटू राज्य और जिला कमेटियों ने पूरा साथ दिया और इस दिन हुए हड़ताल के अन्य कार्यक्रमों में भी भाग लिया। हरियाणा और तमिलनाडु जैसे कुछ राज्यों में राज्य सरकारी कर्मचारी संस्थाओं ने भी ऐसी ही सहायता की। तमिलनाडु में कामकाजी महिलाओं की राज्य व जिला समन्वय समिति ने अभियान में सक्रिय रूप से भाग लिया। सीटू की पत्रिकाओं और कुछ अन्य साथी समाचार पत्रों में लेख लिखकर सीटू नेताओं ने हड़ताल के लिए सकारात्मक वातावरण तैयार किया और आंगनवाड़ी कर्मचारियों को उत्साहित किया। इसी साहस से जो आंगनवाड़ी हमारी यूनियन के सदस्य नही भी थे उन्होंने भी हड़ताल में भाग लिया।

आंध्र प्रदेश में भूमि के लिए शानदार संघर्ष

आंध्र प्रदेश में सीपीआइ (एम) के नेतृत्व में दूसरे वाम पक्षी दलों और जन संगठनों की ओर से गरीबों को घर बनाने लिए जमीन देने और गरीब किसानों को खेती के लिए भूमि दिए जाने की मांग को लेकर चलाए जा रहे शांतिपूर्ण आंदोलन को कुचल डालने के उद्देश्य से 28 जुलाई, 2007 को खम्मम जिले के मुदिगोंडा में पुलिस द्वारा बर्बर हमला किया गया। पुलिस ने उस समय बर्बरता के साथ लोगों पर गोलियां बरसाई, जब वे शांतिपूर्ण ढंग से रास्ता रोको कार्यक्रम चला रहे थे। राज्य की सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार की पुलिस ने गोली चलाने से पहले जो कदम उठाना अनिवार्य है, जैसे आंसू गैस, जल तोपधार, आदि आदि उसे आजमाने की जरूरत ही नहीं समझी। पुलिस गोली से लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक ने बाद में अपने घावों के चलते अस्पताल में दम तोड़ दिया। 16 लोग गम्भीर रूप से घायल हुए हैं। जिन लोगों को अपने प्राण गंवा देने पड़े, उनके नाम हैं – बांका गोप्पइया, पासुपुलेट कुटुम्बा राव, काठिला पेडालक्ष्मी, उसीकुला गोपुलू, वेराना, जे बालास्वामी और एक अन्य।

साफ है कि पुलिस बल पहले से ही यह तय करके आया था कि उसे जान लेने के लिए गोली चलानी है। पुलिस ने लगभग 100 चक्र फॉयर किए थे और गोलियां खत्म होने के बाद ही उन्होंने गोलियां बरसाना बंद किया था।

उल्लेखनीय है कि कांग्रेस पार्टी ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में गरीबों को मकान बनाने के लिए जमीन देने का वादा किया था ओर वाम-पक्षी दलों के दबाव में आकर उसने भूमि की उपलब्धता का समुचित अनुमान लगाने के लिए एक समिति का गठन किया था। इस समिति का गठन 2004 में हुआ था और इसने राज्य सरकार को अपनी रिपोर्ट भी दे दी थी, किन्तु राज्य सरकार ने इस पर भी रिपोर्ट को सार्वजनिक नहीं किया।

आंध्र प्रदेश में 42 लाख एकड़ जमीन ऐसी है, जो 1960 के दशक से विभिन्न नीतियों के अन्तर्गत भूमिहीन गरीबों में बांटी गई है। किन्तु वह जमीन उन लोगों को मिली ही नहीं और उस पर अमीर निहित स्वार्थी तत्वों ने क़ब्जा कर लिया। यह तथ्य अपने स्थान पर बना हुआ है कि सरकार में बड़े पदों पर विराजमान लोगों के साथ अपने सम्पर्को के बल पर धन्ना सेठों ने उस जमीन को हड़प लिया था। उदाहरण के लिए अकेले हैदराबाद शहर में लगभग एक लाख करोड़ रुपए मूल्य की 8716.39 एकड़ जमीन 3830 लोगों के गैर कानूनी कब्जे में है। यदि पूरे राज्य को देखा जाए तो पता चल जाएगा कि लाखों एकड़ जमीन धोखे से धन्ना सेठों तथा उनके गुर्गो द्वारा हथियाई जा चुकी है। कांग्रेस पार्टी जमीन पर उनके अवैध कब्जे को कानूनी रूप देना चाहती है और वह मौजूदा अधिनियम में संशोधन करके इस लूट को जायज करार देने पर तुली हुई है।

जब राज्य सरकार को धोखे की इन कार्रवाईयों के खिलाफ कार्रवाई करने और जमीन को उन लोगों जिन्होंने गैर कानूनी तौर पर कब्जा कर रखा है तथा उसे लोगों को दिए जाने के लिए बातचीत के द्वारा बाध्य नहीं किया जा सका तो वाम पक्षी दलों ने इसका खिलाफ मई 2007 से आंदोलन शुरू कर दिया। गरीब लोगों तथा वाम पक्षी दलों के कार्यकर्ताओं एवं नेताओं पर झूठे मुकद्दमें बनाए जाने और दमन की भीषण कार्रवाईयां किए जाने पर भी यह आंदोलन नहीं रुका। अब तक 25 हजार से अधिक झूठे मुकद्दमें बनाए जा सके हैं; जिन लोगों पर मुकद्दमें बनाए गए हैं उनमें पांच हजार से अधिक महिलाएं हैं। 520 महिलाओं सहित 3,080 लोगों को जेल में बंद किया गया है। सीपीआइ (एम) के सभी नेताओं के खिलाफ जमीन पर जबरन कब्जा करने के आरोप में मामले दर्ज किए गए हैं।

दमन की इन सभी कार्रवाईयों के बावजूद आंदोलन को दबाया नहीं जा सका। जब राज्य सरकार अपने दुराग्रह पर कायम रही तो सीपीआइ (एम) तथा सीपीआइ के राज्य सचिव विध ाान सभा के बाहर अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर बैठ गए। पूरे राज्य में तमाम तालुका मुख्यालयों पर इसी तरह की भूख हड़तालें शुरू हो गईं। जब 27 जुलाई को विधान सभा स्थगित हो गई तो आधी रात के समय भूख हड़ताल पर बैठे नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके चलते जन आक्रोश भड़क उठा और 28 जुलाई को राज्यव्यापी बंद का आह्वान किया गया जो शानदार रूप से सफल रहा। इसी बंद के दौरान पुलिस ने मुदिगोंडा में शांतिपूर्ण ढंग से प्रदर्शन कर रहे लोगों पर बर्बरता के साथ गोली चलाई।

इस घटना के बाद पूरे राज्य में लोगों के गुस्सा भड़क उठा और सभी स्थानों पर लोगों द्वारा जबरदस्त विरोध की कार्रवाईयां की गईं। लोगों का यह सहज स्वाभाविक आंदोलन पूरे देश में फैल चुका है। सीआइटीयू केन्द्र में पहुंचे समाचारों के अनुसार सभी राज्यों तथा देश के अधिकांश औद्योगिक केन्द्रों में सीआइटीयू कार्यकर्ताओं ने दूसरे जन संगठनों के साथ मिल कर 30 तथा 31 मई को मुदिगोंडा पुलिस फायरिंग के खिलाफ जोरदार प्रदर्शनों का आयोजन किया था।

जमीन के लिए आंध्र प्रदेश के लोगों का यह शानदार संघर्ष अभी चल रहा है। देश के मजदूर वर्ग को इस संघर्ष में पूरी ताकत के साथ भाग लेना चाहिए।

मजदूरों, किसानों और खेत मजदूरों की अखिल भारतीय कन्वेंशन ने सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ देशव्यापी संघर्ष का बिगुल बजाया

एम के पन्धे

हर गुजरने वाले दिन के साथ नव–उदारवादी आर्थिक नीतियों का दीवालियापन ज्यादा से ज्यादा बेनकबाब होता जा रहा है। भारत के एक बड़ी आर्थिक ताकत बन कर उभरने के मीडिया के सारे प्रचार के बावजूद शासक वर्ग की राजनीति के खिलाफ जन साधारण का असंतोष बढ़ता जा रहा है। सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की बढ़ती दर के साथ जनता के बढ़ते दरिद्रीकरण ने इन नीतियों के दीवालियापन को बेनकाब करके रख दिया है। जीडीपी की दर बढ़ कर दो अंकों में पहुंच गई है, किन्तु इसके साथ ही बेरोजगारी भी नयी ऊंचाईयों को छू रही है। संगठित क्षेत्र में रोजगार घट रहा है। असंगठित क्षेत्र में कम वेतन वाले घटिया किस्म के रोजगार में मामूली बढ़ोतरी जरूर हुई है, किन्तु शुद्ध अर्थ में श्रम की लागत घटी है, जो इस बात का संकेत है कि वास्तविक अर्थो में औसत आय के स्तर में गिरावट आई है। इसका अर्थ यह है कि कामगार जनता द्वारा पेश किए गए जिस मूल्य सष्जन को जीडीपी की बढ़ती दरों के जरिए दिखाया जा रहा है, वह घरेलू तथा विदेशी दोनों ही तरह के पूंजीपति वर्ग द्वारा हड़पा जा रहा है।

कृषि संकट बदस्तूर जारी है। इसलिए अगर पिछले एक दशक के दौरान दो लाख किसानों ने आत्महत्या की है और ग्रामीण गरीबों में वर्ष 2002 तक अगर भूमिहीनों की संख्या बढ़ कर 35 प्रतिषत तक पहुंच गई है और हर गुजरने वाले दिन के साथ बढ़ती चली जा रही है, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। विरोधाभास देखिए कि शुद्ध अर्थ में कृषि के लिए बैंक ऋण पिछले कुछ वर्षो में बढ़ा है और इसके साथ ही साथ कृषि की बदहाली भी बढ़ी है, जो किसानों की आत्महत्याओं की बढ़ती घटनाओं में प्रतिबिम्बित हो रही हैं, जो अब तक कई गुणा हो चुकी हैं। इससे पता चलता है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में जो साधान झोंके जा रहे हैं, उन्हें ग्रामीण अमीरों या जमाखोरों द्वारा हड़पा जा रहा है।

इस नव–उदारवादी हमले के खिलाफ शोषित–पीड़ित जनता के तमाम तबकों के देशव्यापी संयुक्त संघर्ष की प्रक्रिया पिछले डेढ़ दशक से चल रही है। इस दौरान मजदूर वर्ग ने 11 देशव्यापी हड़तालें की हैं। इसके अलावा अनेकानेक क्षेत्रवार हड़तालें भी हुई हैं। इन कार्रवाईयों के जरिए प्रतिरोध की यह प्रक्रिया जारी रही है, जिसने कुछ हद तक नव–उदारवादी निजाम के कुछ पहलुओं पर अंकुश लगाया है।

किन्तु भूमण्डलीयकरण विरोधी आंदोलन को यह समझ में आ गया है कि नव–उदारवादी हमला जितना बड़ा है और अर्थव्यवस्था में इसने जो विकृतियां पैदा की हैं, उनका मुकाबला करने के लिए ज्यादा बड़ी लामबंदी तथा और कड़े प्रतिरोध की जरूरत है।

इसी वर्ष जनवरी में आयोजित सीआइटीयू का बारहवां महाधिवेशन भी इसी निष्कर्ष पर पहुंचा था और इसी आधार पर उसने नव–उदारवादी नीतियों के खिलाफ मजदूरों, किसानों तथा खेत मजदूरों की संयुक्त देशव्यापी कार्रवाई की तात्कालिक आवश्यकता पर बल दिया था ताकि मजदूरों–किसानों के एक कार्रवाई मंच के गिर्द समाज की सभी श्रेणियों को लामबंद करने की स्थितियां पैदा की जा सकें और क्षेत्रवार संघर्षो की धाराओं को नव–उदारवादी साम्राज्यवादी भूमण्डलीयकरण के खिलाफ जन संघर्ष में तबदील किया जा सके।

18 अप्रैल को सीआइटीयू, अखिल भारतीय किसान सभा तथा अखिल भारतीय खेत मजदूर यूनियन ने मजदूरों, किसानों तथा खेत मजदूरों के जिस संयुक्त संघर्ष का आह्वान किया था, उसने इन संगठनों की पंक्तियों में भारी उत्साह पैदा किया और देश भर में इसे भारी समर्थन मिला।

इस कार्यक्रम के अगले चरण में गत 31 अगस्त कों सीआइटीयू, अखिल भारतीय किसान सभा और अखिल भारतीय खेत मजदूर यूनियन ने संयुक्त रूप से नयी दिल्ली के मावलंकर हाल में मजदूरों–किसानों–खेत मजदूरों की एक संयुक्त कन्वेंशन का आयोजन किया ताकि भविष्य के कार्यक्रम तय किए जा सकें और एक बड़े जन संघर्ष की दिशा में मजदूरों–किसानों–खेत मजदूरों के संगठनों की संयुक्त गतिविधियों को आगे बढ़ाया जा सके।

देश भर से आए लगभग 900 प्रतिनिधियों ने इस कन्वेंशन में भाग लिया जो सीआइटीयू, अखिल भारतीय किसान सभा और अखिल भारतीय खेत मजदूर यूनियन के नेताओं और कार्यकर्ताओं का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। इस तरह इस कन्वेंशन ने ग्रामीण तथा शहरी सर्वहारा तथा किसान जनता के संगठनों को संघर्ष के एक मंच पर ला खड़ा किया।

सीआइटीयू के अध्यक्ष कामरेड एम के पन्धे, अखिल भारतीय किसान सभा सचिव कामरेड नुरूल हुदा और अखिल भारतीय खेत मजदूर यूनियन के अध्यक्ष कामरेड रामैय्या पर आधारित एक तीन सदस्यीय अध्यक्ष मण्डल ने कन्वेंशन की कार्रवाई का संचालन किया। अखिल भारतीय किसान सभा के अध्यक्ष एस आर पिल्लै ने कन्वेंशन में घोषणा का मसौदा पेश करते हुए बताया कि देश में कृषि संकट और रोजगारहीन विकास बढ़ रहा है।

उनका कहना था कि नव–उदारवादी साम्राज्यवादी भूमण्डलीयकरण के हमले से मुट्ठी भर अमीरों को छोड़ कर समाज की सभी श्रेणियों की बदहाली बढ़ रही है और यह स्थिति सघन संयुक्त प्रतिरोध की मांग करती है। उन्होंने जोर देकर कहा कि हमें इसी दिशा में काम करना है।

कन्वेंशन को सम्बोधित करते हुए एम के पन्धे ने बताया कि कैसे नव–उदारवादी आर्थिक सत्ता द्वारा पैदा की गई विकृतियों के चलते शोषित–उत्पीड़ित जनता की कड़ी मेहनत से प्राप्त किए गए लाभों को पूंजीपति और भूस्वामी हड़प रहे हैं, जबकि अर्थव्यवस्था में सम्पत्ति के निर्माण में योगदान देने वाले मजदूरों और किसानों को ठगा जा रहा है।

उन्होंने मजदूरों–किसानों–खेत मजदूरों की रोजी–रोटी तथा उनके अधिकारों पर बढ़ते हमलों के बारे में भी बताया और मजदूरों–किसानों–खेत मजदूरों की ठोस एवं एकजुट कार्रवाईयों की आवश्यकता पर बल दिया। उनका कहना था कि नव–उदारवादी साम्राज्यवादी भूमण्डलीयकरण के खिलाफ भविष्य के सभी संघर्षो में मजदूरों–किसानों–खेत मजदूरों की एकजुट इच्छा शक्ति दिशा निदेशक शक्ति बननी चाहिए।

कन्वेंशन को सम्बोधित करते हुए अखिल भारतीय खेत मजदूर यूनियन के सह सचिव हन्नान मौल्ला ने देश में खेत मजदूरों की दुर्दशा के बारे में बताया; जिन्हें वर्ष में 60–70 दिन से भी कम काम मिल रहा है और वह भी अमानवीय मजदूरी के बदले। इसके चलते वे बदहाली की स्थिति में पहुंच गए हैं। उन्होंने देशव्यापी सघन अभियान से पहले देशव्यापी कार्रवाई की आवश्यकता पर बल दिया।

इस कन्वेंशन को सीआइटीयू की सचिव कामरेड के हेमलता, अखिल भारतीय राज्य सरकारी कर्मचारी फेडरेशन के महासचिव सुकोमल सेन तथा अखिल भारतीय बीमा कर्मचारी एसोसिएशन के महासचिव वेणुगोपाल ने भी सम्बोधित किया।

सीआइटीयू के महासचिव कामरेड मोहम्मद अमीन ने भारत–अमरीकी नाभिकीय समझौते के विरोध में कन्वेंशन में एक प्रस्ताव पेश किया और शोषित–पीड़ित जनता को आह्वान किया कि वह साम्राज्यवादी दबाव के सामने भारतीय शासक वर्गो द्वारा घुटने टेके जाने को बेनकाब करे। अखिल भारतीय खेत मजदूर यूनियन के सह सचिव सुनीत चोपड़ा ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया।

कन्वेंशन ने आंध्र प्रदेश में चल रहे भूमि संघर्ष के साथ एकजुटता व्यक्त करते हुए तथा इस संघर्ष के दौरान खम्मम जिले में मुदीगोंडा में पुलिस की गोली से सात खेत मजदूरों के मारे जाने की निंदा करते हुए भी एक प्रस्ताव पारित किया। अखिल भारतीय किसान सभा के महासचिव के वरद राजन ने यह प्रस्ताव पेश किया और सीआइटीयू की आंध्र प्रदेश राज्य समिति के अध्यक्ष सुधा भास्कर ने इसका अनुमोदन किया।

विभिन्न राज्यों तथा तीनों संगठनों का प्रतिनिधित्व करने वाले 40 प्रतिनिधियों ने कन्वेंशन को सम्बोधित किया और राज्य तथा जिला स्तरों पर चल रही संयुक्त लामबंदियों तथा संघर्षो में मजदूर तथा किसान संगठनों द्वारा इसी तरह की संयुक्त लामबंदी विकसित करने पर बल दिया। उन्होंने भूमण्डलीयकरण की नीतियों के खिलाफ लड़ने के लिए मजदूर–किसान गठबंधन को मजबूत बनाने के अपने दृढ़ निश्चय को भी व्यक्त किया।

कन्वेंशन ने तीनों संगठनों द्वारा जिला स्तरीय संयुक्त कन्वेंशनों और प्रदर्शनों का आयोजन करने के लिए अनेक मुद्दों की पहचान की।

1. जरूरी उपभोक्ता वस्तुओं के दामों को बढ़ने से रोको;
2. किसानों को वाजब कीमत देकर और अनाज की सरकारी खरीद की प्रक्रिया में मजबूती लाकर सार्वजनिक वितरण प्रणाली को कारगर बनाओ और इसे सभी जगह लागू करो;
3. खेत मजदूरों और असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले मजदूरों के लिए संसद में अलग–अलग सर्वसमावेशी विधेयक लाए जाएं;
4. राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना को असरदार तरीके से लागू करो और शहरी क्षेत्रों में इसका विस्तार करके इसे सभी जगह लागू किया जाए;
5. सीमा शुल्क में की गई कटौतियां वापिस ली जाएं क्योंकि इसका हमारी कृषि और परम्परागत उद्योगों पर बुरा असर पड़ता है;
6. आइसीडीएस को सभी जगह लागू करो और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं को नियमित करो, उनकी कामकाजी एवं जीवन स्थितियों में सुधार लाया जाए;
7. किसानों और खेत मजदूरों को सस्ती ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध कराए जाएं और गरीब किसानों के पिछले कर्ज माफ कर दिए जाएं;
8. जमीन खेती करने वाले को दी जाए और इस मामले में एससी/एसटी लोगों का विशेष ध्यान रखा जाए;
9. सभी श्रम कानूनों और न्यूनतम वेतनों को लागू करो;
10. किसानों, खेत मजदूरों और प्रभावित होने वाले दूसरे लोगों के हितों की रक्षा करने के लिए एसईज़ैड अधिनियम एवं नियमों में संशोधन किया जाए।

कन्वेंशन ने स्थानीय, जिला तथा राज्य स्तरों पर तीनों संगठनों की संयुक्त समितियों का गठन करने और देश में अभियान चलाने का भी आह्वान किया। यह अभियान संघर्ष के पहले चरण के दौरान संसद पर प्रदर्शन में अपने उत्कर्ष पर पहुंचेगा। यदि नव–उदरवादी साम्राज्यवादी हमले को बढ़ते जाने से रोकना है तो जन संघर्ष का नेतृत्व करने के लिए संयुक्त मजदूर–किसान पहलकदमी बेहद महत्त्वपूर्ण है। मजदूरों–किसानों–खेत मजदूरों की यह संयुक्त अखिल भारतीय कन्वेंशन एक अच्छी शुरूआत को दिखाती है। अब समय आ गया है कि हर स्तर पर जनता तक पहुंचा जाए और साधारण मजदूरों–किसानों–खेत मजदूरों के बीच एकता स्थापित की जाए ताकि आंदोलन को सच्चे अर्थो में जन आंदोलन बनाया जा सके।

असंगठित क्षेत्र के मजदूरों की शानदार देशव्यापी हड़ताल

सीआइटीयू के आह्वान पर असंगठित क्षेत्र के करीब साढ़े चार करोड़ मजदूरों ने 8 अगस्त, 2007 को देश भर में हड़ताल रखी। यह हड़ताल असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले मजदूरों के लिए सर्वसमावेशी संरक्षण कानून बनाने के मामले में केन्द्र सरकार द्वारा खेले जा रहे धोखाधड़ी पूर्ण खेल के खिलाफ की गई थी, जबकि उसने यह कानून बनाने का वादा किया था।

सत्तारूढ़ होने के तीन साल बाद भी असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले मजदूरों के लिए सर्वसमावेशी संरक्षण कानून बनाने का मामला यूपीए सरकार की प्राथमिकताओं की सूची में नहीं आया है। और तीन साल बाद भी केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने अपने प्रेस इन्फॉरमेशन ब्यूरो के जरिए मई 2007 में असंगठित क्षेत्र के मजदूर विधेयक के रूप में आखिरकार जो कुछ पेश किया है वह देश की 93 प्रतिशत श्रम शक्ति के साथ की गई धोखाधड़ी के अलावा और कुछ नहीं है। यह वह श्रम शक्ति है जो गरीबी में पिसते हुए भी देश के बढ़ते सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 65 प्रतिशत का योगदान देती है।

सरकार का यह कपटपूर्ण खेल इस तथ्य से और बेनकाब हो गया कि सरकार खुद अपने ही नियुक्त किए गए नेशनल कमिशन फॉर एंटरप्राइजेज इन द अन अनआर्गेनाइज्ड सेक्टर (एनसीइयूएस) अर्थात् असंगठित क्षेत्र के उद्यमों के लिए राष्ट्रीय आयोग की सिफारिशों को स्वीकार करने के लिए भी तैयार नहीं है, जो अपनी ये सिफारिशें गत सात जुलाई को प्रधानमंत्री को सौंप चुका है।

आठ अगस्त की यह हड़ताल सरकार को यह चेतावनी देने के लिए की गई थी, कि मजदूरों के साथ वह ऐसा धोखाधड़ी का खेल न खेले और एक ऐसा सर्वसमावेशी विधेयक लेकर आए जिसमें कम से कम निम्नलिखित बातें शामिल हों:

0 जिसमें तमाम बुनियादी श्रम कानून समाहित हों।

0 जिसमें वैधानिक न्यूनतम वेतन को वैज्ञानिक ढंग से सूत्रबद्ध किया गया हो और वह कड़ाई से लागू हो।

0 जिसमें रोजगार संरक्षण तथा शिकायत निबारण सम्बन्धी सर्वसमावेशी प्रावधान हों।

0 जिसमें कामकाजी महिलाओं के लिए समान वेतन कानून को कड़ाई से लागू किया जाए।

0 जिसमें लोअर लेवल सर्वसमावेशी सामाजिक सुरक्षा लाभों के लिए धन केन्द्र सरकार द्वारा उपलब्ध कराया जाए और

0 जिसमें कानून के कार्यान्वयन के लिए फण्ड के प्रावधान को साफ तौर पर पारिभाषित किया गया हो।

हड़ताल की इस कार्रवाई को देश भर में जम्मू–कश्मीर से लेकर केरल तक शानदार समर्थन मिला। असंगठित क्षेत्र के करोड़ों मजदूरों ने शहरों तथा अर्द्ध–शहरी इलाकों के तमाम प्रमुख केन्द्रों में हड़ताल की इस कार्रवाई में भाग लिया और अनेक स्थानों पर भारी जुलूसों के रूप में वे सड़कों पर आए और रास्ता रोको प्रदर्शनों का आयोजन किया।

इस हड़ताल में देश भर में विभिन्न स्थानों पर ईंट–भट्ठा मजदूरों, बीड़ी मजदूरों, पल्लेदारों, रिक्शा, ऑटो–रिक्शा तथा टैक्सी जैसी निजी परिवहन चालकों, कालीन बुनकरों, छोटी टैक्सटाइल इकाईयों के मजदूरों, हौजरी मजदूरों, काजू और नारियल जटा मजदूरों और ताड़ी मजदूरों आदि ने भाग लिया।

इस हड़ताल में पल्लेदारों के भाग लेने के चलते देश भर की मण्डियां और दूसरे व्यापारिक केन्द्र ठप्प होकर रह गए। पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, छत्तीसगढ़ आदि में बड़ी कृषि मण्डियां और एफसीआइ के गोदाम खास तौर से प्रभावित हुए और वहां कोई काम नहीं हुआ। हड़ताल के चलते केरल में तमाम बड़े शॉपिंग मॉल बंद रहे। अगरतला, गुवाहाटी, ग्वालियर, पठानकोट जैसे देश के अनेक शहरों में निजी परिवहन मजदूरों के हड़ताल पर चले जाने के कारण सामान्य आवाजाही बुरी तरह प्रभावित हुई और बंद की स्थिति बन गई। राष्ट्रीय केमिकल्स एण्ड फर्टिलाइजर्स, एचपीसीएल, साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स, वेस्टर्न कोलफील्ड्स आदि विभिन्न उद्योगों के ठेका मजदूरों ने भारी संख्या में हड़ताल में भाग लिया।

सीआइटीयू असंगठित क्षेत्र के मजदूरों को इस शानदार हड़ताल के लिए बधाई देता है और आह्वान करता है कि अगर सरकार उनकी उचित मांग को नहीं मानती है तो आगे की जुझारू कार्रवाई के लिए तैयार रहें।

आठ अगस्त को दोपहर 12 बजे तक प्राप्त विभिन्न राज्यों की सूचनाएं इस प्रकार हैं:–

केरल

केरल में निजी परिवहन के मजदूरों ने पूर्ण हड़ताल रखी, जिसके चलते सामान्य आवाजाही बुरी तरह प्रभावित हुई। लोग अपने दफ्तर और काम करने की जगहों पर नहीं पहुंच सके। सभी बड़ी दुकानें, मार्केट सेंटर, शॉपिंग मॉल बंद रहे जिससे बंद की सी स्थिति पैदा हो गई। परम्परागत क्षेत्रों और लघु संस्थानों के मजदूरों ने पूर्ण हड़ताल रखी और सभी जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शन किया।

पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल में एक अनुमान के अनुसार राज्य में करीब एक करोड़ मजदूरों ने हड़ताल में भाग लिया। रिक्शा, ऑटो–रिक्शा, टैक्सी और दूसरे निजी वाहन चालक और मजदूर पूर्ण हड़ताल पर रहे जिसके चलते सामान्य आवाजाही बुरी तरह प्रभावित हुई।

दुकानों में काम करने वाले मजदूरों, पल्लेदारों और बड़ी दुकानों तथा मार्केट सेंटरों के मजदूरों की जबरदस्त हड़ताल के चलते कोलकाता के बड़ा बाजार और राज्य के दूसरे हिस्सों में भी ऐसे केन्द्रों में वीरानी का आलम रहा। बारह लाख बीड़ी मजदूर पूरी तरह हड़ताल पर रहे। प्राइवेट सैक्योरिटी मजदूरों ने भी पूरे राज्य में भारी संख्या में हड़ताल में भाग लिया।

राज्य में पत्थर खदानों, ईंट–भट्ठों, गारमेंट, टेलरिंग, हैंडलूम प्रिंटिंग, बुक बाइंडिंग, खादी तथा हौजरी आदि उद्योगों में हड़ताल रही। वन मजदूरों ने हड़ताल रखी। कुम्भकारों, चूड़ी मजदूरों, रबड़ उत्पादन में लगे मजदूरों आदि ने पूर्ण हड़ताल रखी। रेलवे हॉकरों, छोटे दुकानदारों

और रेहड़ी पटड़ी वालों तथा फेरी वालों ने भी पूर्ण हड़ताल रखी।

त्रिपुरा

त्रिपुरा में निजी परिवहन के मजदूरों, दुकानों में काम करने वाले मजदूरों, हैंडलूम मजदूरों, लकड़ी मजदूरों, सेनिटरी तथा पलॅम्बिंग मजदूरों, निर्माण मजदूरों, पत्थर तोड़ने वाले मजदूरों, टेलरिंग मजदूरों, लुहारों, बेकरी वालों, हथकरघा मजदूरों, रबड़ बागानों में काम करने वाले मजदूरों, बीड़ी मजदूरों, कुम्भकारों और गैर परम्परागत पेशों से जुड़े मजदूरों समेत 31 कारोबारों के असंगठित मजदूरों ने हड़ताल में भाग लिया और यहां पूर्ण हड़ताल रही। इसके चलते पूरे राज्य में बंद की सी स्थिति पैदा हो गई थी। एक अनुमान के अनुसार यहां करीब 6 लाख मजदूरों ने हड़ताल की कार्रवाई में भाग लिया।

पंजाब

पंजाब में जबरदस्त हड़ताल रही। हड़ताली मजदूरों ने फतेहगढ़ साहेब, अमृतसर, चण्डीगढ़, रायकोट, गढ़शंकर, मूनक, मोगा, नवांशहर, रोपड़, अहमदगढ़, मलोट, मलेर कोटला, राजपुरा, संगरूर, भटिण्डा, रोपड़, पठानकोट, बटाला, जालन्धर तथा लुधियाना सहित 25 स्थानों पर औद्योगिक मजदूरों, एफसीआइ मजदूरों, परिवहन मजदूरों, ईंट भट्ठ मजदूरों और खेतिहर श्रमिकों ने विशाल प्रदर्शन किए और चक्का जाम किया। होशियारपुर में रेल रोको कार्रवाई का आयोजन किया गया। करीब 50,000 ईंट–भट्ठा मजदूरों ने हड़ताल रखी और विभिन्न जिला मुख्यालयों पर प्रर्दशन किए। एफसीआइ गोदामों में काम करने वाले मजदूरों, निर्माण मजदूरों, ठेका मजदूरों, वन मजदूरों, आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं और अनाज मण्डियों के पल्लेदारों ने पूर्ण हड़ताल रखी, उन्होंने एकजुट होकर रैलियां निकालीं और अनेक स्थानों पर चक्का जाम किया जिसके चलते कारोबार और व्यापार पूरी तरह ठप्प हो गया।

राजस्थान

राजस्थान में गंगा नगर और हनुमान गढ़ में पल्लेदारों की हड़ताल के चलते एफसीआइ गोदाम और अनाज मण्डियां बंद रहीं। राज्य के प्रमुख हिस्सों में रिक्शा चालक, ट्राली तथा वैन चालक, ट्रैक्टर चालक हड़ताल पर रहे। कोटा, कांकरोली, रावतभाटा आदि स्थानों पर विभिन्न उद्योगों के ठेका मजदूर हड़ताल पर रहे जिससे सामान्य उत्पादन प्रभावित हुआ। टोंक में हड़ताल के बाद बीड़ी मजदूरों और कालीन मजदूरों ने विशाल जुलूस निकाले और प्रदर्शन किए। हनुमानगढ़, गंगानगर, झुंझनु, कोटा, जयपुर, उदयपुर, भरतपुर, डूंगर पुर, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों से प्राप्त सूचनाओं के अनुसार हजारों की संख्या में मजदूरों ने इसी तरह की रैलियों और प्रदर्शनों का आयोजन किया।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में बीड़ी मजदूरों, दिहाड़ी मजदूरों, लघु औद्योगिक इकाईयों के मजदूरों ने हड़ताल में भाग लिया। एसईसीएल तथा डब्ल्यूसीएल कोलियरियों के ठेका मजदूर हड़ताल पर रहे जिससे सामान्य उत्पादन प्रभावित हुआ। ग्वालियर तथा डाबरा में बंद की सी स्थिति रही। पल्लेदारों, दिहाड़ी मजदूरों, ठेका मजदूरों, हॉकरों, रेहड़ी–पटड़ी वालों, निर्माण मजदूरों आदि ने इंदौर, जबलपुर, गुना, भोपाल, सिहोर, रतलाम, छिंदवाड़ा, सागर, दमोह, जबलपुर, रतलाम, उमरिया, अनूपशहर, शहडोल, शिवपुरी, नागदा, मंदसौर, नीमच, भिण्ड, बालाघाट, मण्डीदीप, सतना, मुरैना में हजारों की संख्या में जुझारू प्रदर्शनों का आयोजन किया और हड़ताल में भाग लिया। इंदौर में रेल रोको का आयोजन किया गया। भोपाल में हड़ताली मजदूरों ने मुख्यमंत्री के आवास पर विशाल प्रदर्शन किया, जिसमें हजारों मजदूरों ने भाग लिया और ज्ञापन दिया। रीवा में वर्कचार्ज कन्टरजेन्टस लेबर यूनियन, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका यूनियन, निर्माण मजदूर एकता यूनियन, हम्माल पल्लेदार एकता यूनियन, मेडिकल सेल्स एवं रिप्रजेंटेटिव्स यूनियन, बीड़ी मजदूर एकता यूनियन, आटो ड्राइवर एकता यूनियन से जुड़े सैंकड़ों मजदूरों की ओर से रैली निकाली गई और कमिश्नर के कार्यालय में घुस कर जोरदार प्रदर्शन किया गया।

उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून में ठेका मजदूरों, निजी परिवहन और निर्माण मजदूरों आदि विभिन्न क्षेत्रों के असंगठित मजदूरों ने हड़ताल रखी और शहर में तीन जगहों पर प्रदर्शनों का आयोजन किया। राज्य सैक्रेटेरिएट के समक्ष संगठित क्षेत्र के मजदूरों ने एकजुटता प्रदर्शन का आयोजन किया। हरिद्वार में फेरी वालों और दुकानों में काम करने वाले मजदूरों ने हड़ताल रखी और विशाल प्रदर्शन आयोजित किया। हल्द्वानी तथा पंत नगर में कृषि फार्मों में काम करने वाले मजदूरों ने हड़ताल रखी और जुझारू प्रदर्शन आयोजित किए।

हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश की बारह पण विद्युत परियोजनाओं में काम पूरी तरह ठप्प रहा। इन परियोजनाओं के मजदूरों ने पूर्ण हड़ताल रखी। ऊना को छोड़ कर शेष सभी जिला मुख्यालयों पर हड़ताली मजदूरों ने हजारों की संख्या में प्रदर्शन किया। इनमें निर्माण मजदूर, पीडब्ल्यूडी के ठेका मजदूर, दिहाड़ी मजदूर, दोपहर के भोजन के लिए काम करने वाले मजदूर आदि शामिल थे। शिमला में होटल मजदूरों ने दूसरे मजदूरों के साथ मिल कर विशाल एकजुटता प्रदर्शन का आयोजन किया।

कर्नाटक

कर्नाटक की राजधानी बंगलौर में बीड़ी मजदूरों, आंगनवाड़ी मजदूरों, पंचायत मजदूरों, दोपहर के भोजन के लिए काम करने वाले मजदूरों और पल्लेदारों आदि असंगठित क्षेत्र के मजदूरों ने विशाल रैली का आयोजन किया। उत्तरी कन्नड़, उडुपी, हासन, तुमकुर, गुलबर्गा, चित्रदुर्गा, कोप्पाला, रायचूर, बीजापुर, कोडागु, मांडया, बीदर, दावनगेरे, शिमोगा, चिकमंगलूर तथा अन्य स्थानों में टाइल्स मजदूरों, बीड़ी मजदूरों, काजू मजदूरों, ऑटो रिक्शा वालों आदि ने हड़ताल रखी और जुझारू प्रदर्शनों का आयोजन किया। संगठित क्षेत्र के मजदूरों ने भी एकजुटता प्रदर्शनों का आयोजन किया।

आंध्र प्रदेश

आंध्र प्रदेश में हड़ताल के आह्वान को जबरदस्त प्रत्युत्तर मिला। बीड़ी मजदूरों, रिक्शा और ऑटो रिक्शा चालकों, ठेका मजदूरों, अस्थायी मजदूरों, वन मजदूरों, पंचायत मजदूरों, चौकीदारों इत्यादि लगभग 6 लाख मजदूरों ने इस हड़ताल में भाग लिया। राज्य भर में कलेक्टर कार्यालयों और मण्डल कार्यालयों का घेराव किया गया और धरना दिया गया। राज्य भर में लगभग 500 स्थानों पर रेल रोको और रास्ता रोको कार्रवाईयों का आयोजन किया गया। घेराव तथा रास्ता रोको कार्रवाईयों में लगभग तीन लाख हड़ताली मजदूरों ने भाग लिया।

बिहार

बिहार में रिक्शा तथा ऑटो रिक्शा चालकों, बीड़ी मजदूरों, निर्माण मजदूरों, वन मजदूरों, रेलवे के हॉकरों, मण्डियों के पल्लेदारों आदि ने राज्य भर में जबरदस्त ढंग से हड़ताल में भाग लिया। पटना जंकशन रेलवे स्टेशन पर रेल रोको कार्रवाई का आयोजन किया गया जो कई घण्टे चली। इस कार्रवाई में शामिल हड़तालियों ने बहादुरी के साथ पुलिस कार्रवाई का सामना किया। पूर्णिया शहर में बंद की सी स्थिति रही। जहानाबाद, हाजी पुर, मुजफर पुर, वैशाली, जमुई तथा बेगुसराय इत्यादि शहरों में हड़ताली मजदूरों ने जुझारू प्रदर्शन किए। पटना में डाक बंगला रोड पर रास्ता रोको कार्रवाई का आयोजन किया गया।

झारखण्ड

झारखण्ड में बीड़ी मजदूरों, निर्माण मजदूरों, कोलियरियों में काम करने वाले ठेका मजदूरों, पत्थर खदान मजदूरों आदि ने पूर्ण हड़ताल रखी। निजी परिवहन सेवाओं के मजदूर राज्य के अनेक शहरों में हड़ताल पर रहे। रांची, पांकुड़, साहिबगंज, दुमका, गोगिया, आदित्यपुर तथा अन्य स्थानों पर जुझारू प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। रांची स्थित इंडियन ऑयल और आइबीपी तेल डिपो में पेट्रोलियम लोडिंग, एचईसी में ठेका मजदूरों ओर बुण्डु में निर्माण मजदूरों, आंगनवाड़ी कर्मचारियों, धनबाद जिले में कोयला लोडिंग में लगे ठेका मजदूरों ने पूरी तरह काम बंद रखा। नीरसा, चतरा, हजारीबाग, बोकारो, सरायकेला–खरसांवा जिलों में आंगनवाड़ी, इंजीनियरिंग उद्योग, कोयला ढुलाई करने वाले मजदूरों, मोटिया श्रमिकों परिवहन निर्माण क्षेत्र के मजदूरों ने हड़ताल में भाग लिया और रैलियां निकालीं।

उड़ीसा

उड़ीसा भर में बीड़ी मजदूरों, निजी परिवहन सेवाओं के मजदूरों, छोटे दुकानदारों और दुकानों में काम करने वाले मजदूरों, हॉकरों तथा अनौपचारिक क्षेत्र के विभिन्न पेशों में लगे मजदूरों ने हड़ताल में भाग लिया। राज्य की राजधानी भुबनेश्वर के अलावा कटक, भद्रक, पुरी, गंजाम, खुर्दा बालासोर, दमनजोड़ी इत्यादि स्थानों पर हड़ताली मजदूरों ने विशाल रैलियों का आयोजन किया और जिला अधिकारियों को ज्ञापन दिए। राऊरकेला इस्पात संयंत्र के ठेका मजदूरों, दामोनजोड़ी तथा आंगुल के नाल्को संयंत्रों के ठेका मजदूरों और राज्य के पूरे खदान क्षेत्र के मजदूरों ने हड़ताल में भाग लिया। बिमलगढ़ में रेल रोको कार्रवाई का आयोजन किया गया। यहां करीब 850 मजदूरों को गिरफ्तार किया गया। महानदी कोलफील्ड्स के मजदूरों ने अपने मुख्यालय पर प्रदर्शन किया।

गुजरात

गुजरात में निजी परिवहन सेवाओं के मजदूरों ने शानदार हड़ताल की। लॉरी मजदूरों, ऑटो रिक्शा चालकों, निर्माण मजदूरों आदि ने पूरे राज्य में हड़ताल रखी और बड़ौदा, भावनगर, राजकोट, उपलेता तथा जूनागढ़ में प्रदर्शनों का आयोजन किया गया।

उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश में कानपुर के दादानगर, पंकी तथा फजल गंज औद्योगिक क्षेत्र में पूर्ण बंद रहा और हड़ताली मजदूरों ने पुलिस के बर्बर लाठीचार्ज का मुकाबला करते हुए जुझारू प्रदर्शन आयोजित किया। मेरठ, इटावा, मुरादाबाद धरना–प्रदर्शनों का आयोजन किया गया और जिलाधीशों को ज्ञापन भेंट किए गए। सहारनपुर में रबड़, इंजीनियरिंग तथा हौजरी उद्योग हड़ताल के चलते ठप्प रहे। बनारस तथा बरेली में जुझारू प्रदर्शन हुए। फिरोजाबाद औद्योगिक क्षेत्र में बंद की सी स्थिति रही और हड़ताली मजदूरों ने जुझारू प्रदर्शन आयोजित किए।

मजदूरों पर लाठीचार्ज–कानपुर में देशव्यापी हड़ताल के सिलसिले में गोल्डी मसाला फैक्टरी के धरने पर बैठे शांतिप्रिय मजदूरों पर पुलिस की ओर से बर्बर लाठीचार्ज किया गया। इस पर तत्काल सीआइटीयू के राज्य पदाधिकारियों की आकस्मिक बैठक बुलाई गई जिसमें पुलिस बर्बरता की कड़ी निंदा की गई।

हरियाणा

हरियाणा में ईंट भट्ठा तथा भवन निर्माण क्षेत्र के करीब एक लाख मजदूरों ने हड़ताल में भाग लिया। वन विभाग के मजदूरों, ग्रामीण चौकीदारों, रिक्शा चालकों, टेक्सटाइल के ठेका मजदूरों और फेरीवालों के बीच हड़ताल शानदार रूप से सफल रही। हिसार, भिवानी, पंचकूला, फतेहाबाद, गुड़गांव, रोहतक, सोनीपत, जींद और पानीपत में जोरदार प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। फरीदाबाद में हड़ताली ऑटो रिक्शा चालकों ने शहर में जबरदस्त जुलूस निकाला और मिनी सैक्रटेरिएट पर प्रदर्शन किया।

दिल्ली

दिल्ली में बीड़ी मजदूरों, रिक्शा चालकों, ठेका मजदूरों, फेरीवालों और रेलवे हॉकरों ने हड़ताल के आह्वान को अपना जबरदस्त समर्थन दिया। हड़ताली मजदूरों ने चांदनी चौक, पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन, समय पुर बादली, आजाद पुर, नरेला, मंगोल पुरी, विकास पुरी, महिपाल पुर, त्रिलोक पुरी, सीमा पुरी तथा सोनिया विहार में जुझारू प्रदर्शनों का आयोजन किया। नोएडा में सीआइटीयू कार्यकर्ताओं की ओर से विशाल जुलूस निकाला गया और मजिस्ट्रेट के कार्यालय के आगे धरना दिया गया।

असम

असम में गुवाहाटी, नलबारी, बोंगाईगांव, कामरूप, कोकराझाड़, जोरहाट, नौगांव, गोपालपाड़ा, समेत राज्य के सभी जिलों तथा शहरों में हड़ताल के आह्वान को अभूतपूर्व समर्थन मिला। इस हड़ताल में खास तौर पर निर्माण मजदूरों, निजी परिवहन सेवाओं में लगे मजदूरों, फेरीवालों आदि ने भाग लिया। हड़ताल के चलते निजी परिवहन सेवा ठप्प रही और राज्य के अधिकतर शहरों में बंद की सी स्थिति रही। सभी जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। कोकराझाड़ जिले में गोंसाईगांव में रास्ता रोको कार्रवाई का आयोजन किया गया। गुवाहाटी में अधबाड़ी तथा पलटन बाजार बस अड्डे वीरान पड़े थे।

छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ में अनेक स्थानों पर मजदूरों ने चक्का जाम करके रैलियों का आयोजन किया। बीड़ी उद्योग, कृषि उपज मण्डी, बैलगाड़ी परिवहन, सिंचाई विभाग में काम करने वाले दैनिक वेतन भोगियों की ओर से जगह–जगह हड़ताल की गई। इसके कारण समस्त उद्योगों की गतिविधियां ठप्प हो गईं। धमतरी में बैलगाड़ी यूनियन कार्यालय से सभी उद्योगों में काम करने वाले अस्थायी और दैनिक वेतन भोगी मजदूरों की ओर से रैली निकाली गई।

कामरेड पी राममूर्ति का जन्म शताब्दी वर्ष धूमधाम से मनाओ

सीआईटीयू संस्थापक महासचिव कामरेड पी राममूर्ति का जन्म शताब्दी वर्ष 20 सितम्बर, 2007 से शुरू हो रहा है। बंगलौर में 17–21 जनवरी, 2007 को आयोजित सीआइटीयू के बारहवें महाधिवेशन ने कामरेड पी राममूर्ति का जन्म शताब्दी वर्ष धूमधाम से मनाने का फैसला किया था। बारहवें महाधिवेशन में पारित सीआइटीयू महासचिव की रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है:

''का० पी.आर. जैसा कि उन्हें स्नेह से कहा जाता था, का जीवन अथक संघर्ष, कुर्बानियों. से भरपूर, जेल में बीता जीवन रहा है। का० पी.आर. का जीवन शासक वर्गों के साथ–साथ गैर जनवादी एव सामन्ती परम्पराओं से अनवरत टकरावों से भरा जीवन रहा है।''

का० पी.आर. अद्भुत गुणों और क्षमताओं से भरपूर शख्सियत रहे हैं। वह जन नेता, ट्रेड यूनियन आंदोलन के संगठनकर्ता, प्रभावशाली वक्ता और ओजस्वी व प्रतिभाशाली सासंद, प्रभावी पत्रकार, आंदोलन की सामग्री के विद्वान लेखक, विचारधारात्मक बहसों में भाग लेने वाले प्रभावशाली वक्ता और योग्य शिक्षक रहे हैं। यह महाधिवेशन निर्णय लेता है कि संगोष्ठियों, स्मृति व्याख्यान माला के आयोजन, नए प्रकाशन लाकर, ट्रेड यूनियन कक्षाओं के आयोजन तथा अन्य अनेक तरीकों से का० पी. राममूर्ती की जन्मशताब्दी मनाई जाए। इस महाधिवेशन के तुरन्त बाद सीआइटीयू सचिव मण्डल इस बारे में एक मुकम्मल योजना तैयार करेगा।

सीआइटीयू जनरल कौंसिल ने 27–30 मई, 2007 को कोलकाता में आयोजित अपनी पिछली बैठक में ''कोलकाता में जबरदस्त जन लामबंदी के साथ पीआर के जन्म शताब्दी समारोह का आरम्भ और 20 सितम्बर, 2008 को चेन्नै में इसी तरह की व्यापक लामबंदी के साथ समापन करने का फैसला किया था।''

सीआइटीयू की राज्य समितियों, उद्योगवार फैडरेशनों, सम्बद्ध इकाईयों तथा हमसे जुड़ी यूनियनों से अनुरोध किया जाता है कि वे बारहवें महाधिवेशन द्वारा दिए गए दिशा निदेशों जिन्हें सीआइटीयू जनरल कौंसिल ने भी दोहराया था, के अनुसार सीआइटीयू के संस्थापक महासचिव तथा श्रमिक आंदोलन के असाधारण नेता कामरेड पी आर के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में समुचित ढंग से समारोहों का आयोजन करने के लिए पहलकदमियां करें।

परमाणु समझौते के खिलाफ सीआईटीयू कार्यकारिणी ने किया आह्वान

सीआईटीयू की कार्यकारिणी कमेटी की बैठक 6–8 अक्टूबर 2007 को बीटीआर भवन, नई दिल्ली में हुई। बैठक में भारत अमेरिका के बीच परमाणु समझौते पर एक प्रस्ताव पारित किया गया। कमेटी ने रेखांकित किया कि दोनों देशों के बीच यह विकास का समझौता नहीं, बल्कि राजनीतिक समझौता है जिसके भारत की विदेश नीति तथा सम्प्रभुता पर दूरगामी प्रभाव पड़ेंगे। यह समझौता राजनैतिक, आर्थिक, सैन्य और परमाणु सहयोग को भी प्रभावित करता है। इस समझौते में राजनैतिक, आर्थिक व सैन्य शक्तियां भी कवर होती हैं। उसका इरादा अपने सामरिक (सैन्य) उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भारत को अपना कनिष्ठ सहयोगी बना कर रखना है।

कार्यकारिणी कमेटी ने राज्य कमेटियों और संबंद्धित यूनियनों का आहवान किया कि वे यूपीए सरकार की इस राष्ट्र विरोधी नीति का विरोध करें।

त्रिपुरा में आंगनवाड़ी कर्मचारियों का पहला राज्य सम्मेलन

आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं का पहला राज्य सम्मेलन 28–29 जुलाई 2007 को बिशलगढ़, पश्चिम त्रिपुरा में हुआ। इस अवसर पर बारिश के बीच राज्य आयोजक कमेटी की अध्यक्ष शरबानी चक्रवर्ती की अध्यक्षता में एक रैली और सार्वजनिक बैठक हुई। अखिल भारतीय आंगनवाड़ी सेविका और सहायिका फैडरेशन की महासचिव के. हेमलता, आइफा अध्यक्षा नीलिमा मैत्रा और राज्य समाज कल्याण मंत्री माणिक डे ने जनसमूह को संबोधित किया। रैली के बाद सांय काल के समय 337 प्रतिनिधियों सहित सम्मेलन का पहला सत्र आरम्भ हुआ। 7 सदस्यीय अध्यक्षमंडल का गठन किया गया। काजल रानी सरकार ने बहस के लिए रिपार्ट प्रस्तुत की 25 प्रतिनिधियों पे रिपोर्ट पर बहस में भाग लिया और रिपोर्ट को एकमत होकर स्वीकारा गया।

माणिक डे और सीआईटीयू राज्य सचिव पियूष नाग ने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के प्रति समर्थन जताया। देश के बड़े राज्यों की तुलना करते हुए हेमलता ने कहा कि बहुत से राज्यों में गईं है और वहां आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को दयनीय स्थिति में देखा है। उनकी तुलना में, वर्तमान समय में त्रिपुरा के आंगनवाड़ी कार्यकर्ता बेहतर अवस्था में हैं। माणिक डे ने उत्तरी भारत के राज्यों की ओर केंद्रीय सरकार के व्यवहार में भेदभाव का वर्णन किया जिसे त्रिपुरा के लोग सहन कर रहे थे। नीलिमा मैत्रा ने महिलाओं ओर बच्चों पर केंद्रीय सरकार द्वारा अपनाई जा रही भूमण्डलीयकरण की नीतियों की आलोचना की।

29 जुलाई को समापन सत्र में सम्मेलन में 80 सदस्यीय राज्य कमेटी ओर 18 सचिव मंडल के सदस्यों को चुना। शर्बानी चक्रवर्ती और काजल रानी सरकार को क्रमशः अध्यक्ष और सचिव चुना गया।

आंगनवाड़ी मुलाजिम यूनियन पंजाब

पंजाब आंगनवाड़ी मुलाजिम यूनियन की विस्तृत कार्यकारिणी कमेटी की बैठक 7 सितम्बर 2007 को चण्डीगढ़ में हुई। बैठक में 10 जिलों से लगभग 72 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। यूनियन की अध्यक्ष ऊषा रानी ने बैठक की अध्यक्षता की। आइफा की महासचिव हेमलता और सीआईटीयू पंजाब राज्य कमेटी के महासचिव रघुनाथ सिंह ने भी बैठक में भाग लिया, जोकि सांय आरम्भ होकर आधी रात तक चली। इस दिन आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने केंद्रों में अपना कार्य समाप्त किया और राज्य के विभिन्न कोनों से यात्रा कर बैठक में भाग लेने हेतु आईं और सुबह होते ही पुनः केंद्रों पर समय से पहुंचने के लिए निकल चलीं।

ऊषा रानी द्वारा एक लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत की गई, जिसमें उनकी पिछली कार्यकारिणी कमेटी बैठक के बाद की गतिविधियों की समीक्षा की गई थी। बैठक में राज्यभर से 10 जुलाई की आम हड़ताल में भाग लेकर इसे सफल बनाने वाली सभी आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं को बधाई दी गई। यह रेखांकित किया गया कि यूनियन की सदस्यता 13 जिलों में है, परन्तु बैठक में 15 जिलों से आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भाग लिया।

बैठक में संतोषजनक रूप से यह भी रेखांकित किया गया कि 18 अप्रैल 2007 को मजदूर, किसान, खेतिहर मजदूरों के अखिल भारतीय मांग दिवस और 8 अगस्त 2007 को असंगठित मजदूरों की अखिल भारतीय आम हड़ताल पर आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने न केवल सक्रिय रूप से भाग लिया, बल्कि कुछ परियोजनाओं में तो उन्होनें स्वयं प्रदर्शन करने की जिम्मेदारी भी उठाई।

रिपोर्ट पर बहस में सभी जिलों के प्रतिनिधियों के भाग लेने बाद सभी ने रिपोर्ट में प्रस्तुत किए गए कार्यों को सर्वसम्मति से स्वीकारा। कमेटी ने निर्णय लिया कि चण्डीगढ़ में 15–16 नवम्बर 2007 को राज्य सम्मेलन होने से पहले अक्टूबर माह के अंत तक 2007 की सदस्यता के आधार पर परियोजना और जिला स्तरीय सम्मेलन कर लिए जाऐंगे। सभी जिला कमेटियों को परियोजना व जिला सम्मेलनों की विस्तृत योजना बनाने के लिए 30 सितम्बर से पूर्व बैठकें करने का निर्देश दिया गया। 2 अक्टूबर 2007 को पुनः राज्य कमेटी की बैठक करने का भी निर्णय लिया गया।

लाभार्थियों से करोड़ों हस्ताक्षर एकत्र करके प्रधानमंत्री को देने के अखिल भारतीय आंगनवाड़ी सेविका एवं सहायिका फैडरेशन (आइफा) के निर्णय को बैठक में सर्वसम्मति और उत्साहपूर्वक स्वीकारा गया। यह निर्णय लिया गया कि यूनियन का प्रत्येक सदस्य कम से कम 200 हस्ताक्षर एकत्र करेगा। पर्चा वितरण, दीवाल लेखन, लाभार्थियों की सामूहिक बैठकें इत्यादी की जाऐंगी और घर – घर जाकर न केवल गांवों में बल्कि बाज़ार, रेलवे स्टेशन इत्यादी से भी हस्ताक्षर एकत्र किए जाऐंगे। यूनियन ने निर्णय लिया कि वे लाभार्थियों के बीच अभियान चलाऐंगे कि 'आईसीडीएस हमारे बच्चों के स्वास्थ्य, भोजन और शिक्षा के अधिकार से संबंधित है' और संघर्षों में भाग लेकर आईसीडीएस को बचाना उनका कर्तव्य है।

एक ही तरह की ड्रेस में प्रदर्शन कर प्रधानमंत्री को हस्ताक्षर सौंपने के फैडरेशन के निर्णय को लेकर आंगनवाड़ी कर्मचारियों में काफी उत्साह था।

हेमलता और रघुनाथ सिंह ने आंगनवाड़ी कर्मचारियों की चेतना को बढ़ाने और राज्य, जिला, परियोजना स्तर पर ट्रेड यूनियन कक्षाओं और कुछ पत्रिकाओं जैसे 'पत्रिका' का सर्कुलेशन बढ़ाने पर जोर दिया।

हिमाचल प्रदेश में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का राज्य सम्मेलन

हिमाचल प्रदेश में आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं का आठवां राज्य सम्मेलन 8 और 9 सितम्बर 2007 को हमीरपुर के शहीद बाबूराम नगर में हुई।

पहाड़ियों से भरा हुआ एक छोटा सा शहर 8 सितम्बर 2007 को दोपहर के समय अचानक जिलेभर की आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं के रंगीन जुलूस से जीवित हो उठा। सम्मेलन के प्रतिनिधि लाल झंडे उठाए हुए अपनी जायज़ मांगों पर नारे लगा रहे थे। रैली का समापन गांधी चौक पर एक सार्वजनिक बैठक के साथ हुआ। बैठक की अध्यक्षता, यूनियन की हमीरपुर जिला कमेटी की अध्यक्ष, राजकुमारी द्वारा की गई।

आइफा की महासचिव के. हेमलता, कोषाध्यक्ष ए आर सिंधु, सीआईटीयू हिमाचल राज्य कमेटी के महासचिव कश्मीर सिंह ठाकुर, यूनियन की अध्यक्षा सरोज शर्मा और महासचिव इन्दिरा ठाकुर ने बैठक को संबोधित किया।

सभी वक्ताओं ने आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं के प्रति केंद्रीय और राज्य सरकार के रवैये की कड़ी आलोचना की। एक ओर तो सरकार बड़े निगमों को कंर में छूट और करोड़ों रूपए की राहत दे रही है, तो दूसरी ओर भारत सरकार आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओ को एक सौ रूपये भी देने के लिए तैयार नही है। उन सभी वक्ताओं ने सरकार को चेताया कि यदि वे जन हितकारी नीतियों का अनुसरण नही करेंगें तो उन्हें जन साधारण के रोष का सामना करना होगा। नेताओं ने आंगनवाड़ी कर्मचारियों से संगठन को मजबूत करने और अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष तेज करने का आहवान किया।

शाम के समय कामरेड बाबूराम नगर (ऑडीटोरियम, होटल पंकज) में सम्मेलन का प्रतिनिधि सत्र आरम्भ हुआ। स्वागत कमेटी के अध्यक्ष अमर नाथ चौहान ने स्वागत भाषण दिया।

आइफा कोषाध्यक्षा ए आर सिंधु ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। उन्होनें वर्णन किया कि किस प्रकार यूपीए सरकार सामजिक सुरक्षाएं वापिस ले रही है, और विश्व बैंक की आज्ञानुसार आईसीडीएस

को भी समाप्त करने का प्रयास कर रही है। उनहोनें संगठन को मजबूत करने व अन्य जनसमूहों को संयुक्त संघर्षों का विकास करने पर ज़ोर दिया। उन्होंने प्रतिनिधियों का आहवान किया कि वे स्वंय पिछले तीन वर्षों की गतिविधियों व संगठनात्मक कमजोरियों की स्व अलोचना कर आलोकन करें ताकि वे इन कमजोरियों से बाहार आ सकें। उन्होंनें आइफा द्वारा लिए गए भविष्य के कार्यक्रमों का भी वर्णन किया।

सरोज शर्मा, सुषमा, कृष्णा पटियाल, राजकुमारी, ऊषा नाडियाल, और पुष्पा सहित एक अध्यक्षमंडल ने अधिवेशन की कार्यवाही का संचालन किया।

महासचिव इन्दरा ठाकुर ने रिपोर्ट प्रस्तुत की। दस जिलों से 23 प्रतिनिधियों ने बहस में भाग लिया। बहस के स्तर में सुधार के रूप में वहां सुपरवाइज़र द्वारा उत्पीड़न या अन्य स्थानीय समस्याओं की बजाय बहुत से प्रतिनिधियों ने महासचिव की रिपोर्ट पर आलोचनात्मक टिप्पणियां कीं। उन्होंने राज्य केंद्र के संचालन, संगठनात्मक निर्णयों को लागू नही कर पाना, और पदाधिकारियों के उत्तरदायित्व जैसे बहुत से अभावों को रेखांकित किया। संगठन को मजबूत करने, मुख्य रूप से आंगनवाड़ी केंद्रों की संख्या में वृद्धि करने की आवश्यकता पर सभी सहमत हुए।

चार प्रस्ताव पास हुए – 1. कन्या भ्रूण हत्या के विरोध करना 2. संसद और विधान सभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण की मांग करना 3. आईसीडीएस के नियमितिकरण की मांग करना 4. और आंध्र प्रदेश में भूमि के लिए संघर्षरत जनता पर पुलिस का दमन और हत्याओं के विरोध करना।

सीआईटीयू राज्य अध्यक्ष रविन्द्र कुमार, एडवा राज्य अध्यक्ष सत्या, एसएफआई राज्य महासचिव जोगिन्दर ने सम्मेलन में आए हुए प्रतिनिधियों का बधाई दी। सीआईटीयू राज्य महासचिव कश्मीर सिंह ठाकुर ने भी सम्मेलन में आए हुए प्रतिनिधियों को बधाई दी और हिमाचल प्रदेश की राजनैतिक स्थिति का वर्णन किया।

महासचिव द्वारा जवाब देने के बाद रिपोर्ट एकमत होकर स्वीकारी गई। आइफा महासचिव के हेमलता ने समापन भाषण दिया। उन्होंने वर्णन किया कि क्यों आईसीडीएस के नियमितिकरण का संघर्ष का विकास बच्चों के भोजन, स्वास्थ्य और शिक्षा के विकास की तरह किया जाना चाहिए। उन्होंने आइफा की मध्यावधि समीक्षा के निर्णयों का वर्णन किया और यह भी वर्णन किया कि हम पांचवे अधिवेशन के नारों *'संघर्ष, शिक्षा, संगठन'* और *'सक्षम, प्रतिबद्ध, योग्य कार्यकर्ता'* के रूप में लिए गए निर्णयों के पालन कहां तक कर पाए हैं। उन्होने प्रतिनिधियों का आहवान कि वे स्व आलोचना करके भविष्य की योजना बनाएं।

सम्मेलन में सचिवमंडल के 19 सदस्यों सहित 41 सदस्यों की एक कमेटी गठित की गई जिसमें अध्यक्ष इन्दरा ठाकुर, महासचिव सरोज शर्मा, और कोषाध्यंक्ष अशोक काटोच को चुना गया। सम्मेलन का समापन नारों की गूंज और 'हम होंगे कामयाब' गीत गाते हुए हुआ।

भोपाल में आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने निकाली रैली

आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं की एक बहुत ही विशाल रैली 12 सितम्बर 2007 को भोपाल में निकाली गई। जुलाई 2007 में उच्च न्यायालय द्वारा न्यूनतम मजदूरी की मांग को लेकर 13 जिलों के आंगनवाड़ी कार्यकर्ता मुख्य मंत्री से मिलने आए। अदालत ने तीन माह का समय दिया था, परन्तु आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने पाया कि दो माह बीत चुके हैं परन्तु अब तक सरकार की ओर से कोई प्रत्युत्तर नही मिला है।

एक प्रतिनिधिमंडल, महिला एवं बाल कल्याण विभाग के सचिव से मिला। उनका रवैया बहुत ही नकारात्मक था, सचिव ने कहा इन कार्यकर्ताओं को मानदेय इसलिए मिल रहा है, क्योंकि ये कर्मचारी नही है और वेतन पाने के लायक भी नही हैं।

पोषण के नई प्रणाली के बारे में, कर्मचारियों ने पुरानी प्रणाली के लिए कहा कि भोजन सरकार द्वारा उपलब्ध होना चाहिए और भोजन को कार्यकर्ताओं द्वारा पकाया और वितरित किया जाना चाहिए। परन्तु सचिव ने कहा कि नई प्रणाली यह है कि पूरा धन कार्यकर्ता और महिलाओं के समूह की नेता के नाम पर बैंक के खाते में जमा होगा, जिसमें लाभार्थियों की आठ महिलाएं शामिल हैं। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने महसूस किया कि इस नई प्रणाली में भ्रष्टाचार की बहुत आशंकाएं हैं। जैसा कि सचिव ने कहा *"हम जो भी करते हैं, काफी सोच विचार के बाद ही करते है।"* सचिव का रवैया बहुत ही नकारात्मक था।

प्रतिनिधिमंडल के वापस आने के बाद शाहजानी बाग में एक बैठक हुई जिसमें राज्य सीटू सचिव बादल सरोज और एडवा अध्यक्ष संध्या शैली ने वक्तव्य प्रस्तुत किया। आंगनवाड़ी यूनियन की राज्य महासचिव किशोरी वर्मा ने प्रतिनिधिमंडल की सचिव के साथ हुई बैठक के बारे में बताया।

आइफा अध्यक्षा नीलिमा मैत्रा ने केंद्रीय व राज्य सरकारों की भूमिका के बारे में वक्तव्य प्रस्तुत किया। जहां भी वामपंथ सरकार सत्ता में है, वहां न तो इस प्रकार के गलत निर्णय लिए जाते हैं और न ही ऐसा दमन होता है।

बैठक के बाद पूरा जनसमूह एक जुलूस के रूप में मुख्यमंत्री के निवास स्थान की ओर चला। वे एक स्थान पर जाकर रूक गए। यहां कुछ समय तक नारेबाजी की गई, परन्तु पता चला कि मुख्य मंत्री शहर में नही है। इसलिय पूरे जुलूस ने आगे जाकर रास्ता बंद कर दिया। कुछ समय बाद एसडीएम आए और उन्होनें आश्वासन दिया कि मुख्यमंत्री दो दिन में वापस आ जाऐंगे और वे स्वयं उन्हें बैठक की तिथि निर्धारित करवाएंगें। तब कर्मचारी नीलम पार्क पर एकत्र हुए और एक छोटी सी बैठक की गई। रास्ता बंद करने के अकस्मात् लिए गए निर्णय ने उन्हें काफी उत्साहित किया।

आइफा की मध्यावधि समीक्षा

अखिल भारतीय आंगनवाड़ी सेविका एवं सहायिका फैडरेशन (आइफा) की मध्यावधि समीक्षा 15 से 17 अगस्त तक नागपुर में हुई। बैठक में आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, पांडीचेरी, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तराखंड और पश्चिम बंगाल– 16 राज्यों से 95 कार्यकारिणी कमेटी के सदस्यों और अतिथियों ने भाग लिया। फैडरेशन की अध्यक्ष नीलिमा मैत्रा ने बैठक की अध्यक्षता की।

बहस के लिए दस्तावेज़ प्रस्तुत कर फैडरेशन की महासचिव हेमलता ने पांचवे अधिवेशन के दो उद्देश्य – "संघर्ष तेज करना" और "संगठन को मजबूत करना" का पुनः आहवान किया।

अधिवेशन ने फैडरेशन की अखिल भारतीय कमेटी, राज्य, जिला और परियोजना – सभी कमेटियों का आहवान किया था कि इन उद्देश्यों को आधार बनाकर अपने काम का पुर्नविन्यास करें ताकि 'संघर्ष, शिक्षा और संगठन' तीनों को एक साथ बढ़ाया जा सके। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सचेतन, प्रतिबद्ध और सक्षम कार्यकर्ता का विकास करने पर भी ज़ोर दिया गया। उन्होंने कहा कि इस दिशा में कार्यकारिणी कमेटी के निर्णयों और उन निर्णयों के पालन की समीक्षा करना आवश्यक है।

दस्तावेज में रेखांकित किया गया कि आंगनवाड़ी कर्मचारियों की मांगों के लिए फैडरेशन ने बहुत से कार्यक्रम किए हैं। इनमें रेखांकित किए जा सकने वाले कार्यक्रम थे – दस दिवसीय क्रमिक भूख हड़ताल, संसद मार्च और 10 जुलाई की अखिल भारतीय आम हड़ताल। इन संघर्षों को सफल बनाने के लिए सभी राज्य कमेटियों ने अभियान चलाए, तैयारियां कीं और सभी संघर्षों में आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने हमारी आशा से भी अधिक संख्या में भाग लिया। इसलिए दिशा के एक भाग 'संघर्ष तेज करना' में फैडरेशन लगभग सही रास्ते पर है।

इस डेढ़ साल के दौरान संगठन को मजबूत बनाने के काफी प्रयत्न किए गए हैं, परन्तु दस्तावेज में यह रेखांकित किया गया कि अब भी बहुत सी संभावनाएं हैं जिन पर ध्यान नही दिया गया है। यद्यपि फैडरेशन की सदस्यता में वृद्धि हुई है, परन्तु यह फैडरेशन के विभिन्न आहवानों में भाग लेने वाले आंगनवाड़ी कर्मचारियों की संख्या से मेल नही खाता।

राज्य कमेटियों की काय्रप्रणालियों में भी सुधार आया है, हिन्दी भाषी क्षेत्र में हरियाणा और मध्य प्रदेश राज्य कमेटियों का पुर्नगठन हुआ है और इनके सदस्य भी बढ़े हैं; कश्मीर में एक क्षेत्रिय कमेटी का गठन हुआ है और राज्य में जम्मू की कुछ परियोजनाओं में गतिविधियां भी आरम्भ हो गईं है। राजस्थान में एक राज्य स्तरीय आयोजक कमेटी का गठन हुआ है और लगभग 7–8 जिलों में पूर्ण हड़ताल रही। कर्नाटक राज्य कमेटी ने फैडरेशन का विस्तार करने के लिए बंगलूरू में पांचवां अधिवेशन किया और काफी हद तक सफलता भी प्राप्त की, इस दौरान कुछ जिलों में आंगनवाड़ी कर्मचारी यूनियन में शामिल हुए; गुजरात में एक स्वतंत्र यूनियन फैडरेशन में शामिल हुई; छत्तीसगढ़ में भी इस दौरान एक यूनियन फैडरेशन में शामिल हुई जिसका 12 जिलों में प्रभाव था; ऐसे ही बिहार और झारखंड में भी सदस्यता बढ़ी है। परन्तु अभी तक विस्तार और सुदृढ़ीकरण की और भी संभावनाएं हैं। सुदृढ़ीकरण तभी संभव हो सकता है यदि कार्यकर्ताओं का विकास किया जाए।

दस्तावेज में रेखांकित किया गया कि बहुत सी राज्य कमेटियों ने कार्यकर्ता विकास पर पूरा ध्यान नही दिया। कार्यकारिणी कमेटी में बार – बार इस बात पर जोर दिया जाता है कि संघर्षों और अभियानों में कार्यकर्ताओं की पहचान करें, एक सूची बनाएं, और कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देकर उनका विकास करें। उन्हें उनकी योग्यता के आधार पर उत्तरदायित्व दें। परन्तु इस समझ पर बहुत सी राज्य कमेटियों ने ध्यान नही दिया जिसमें कुछ मजबूत राज्य भी शामिल हैं। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक जैसी बहुत कम राज्य कमेटियां नियमित और योजनाबद्ध तरीके से ट्रेड यूनियन कक्षाएं आयोजित करते हैं।

बैठक का संचालन आलोचना और स्व आलोचनात्मक रूप से करने का पूरा प्रयत्न किया गया। बैठक में जून 2006 में हैदराबाद में हुई अखिल भारतीय संगठनात्मक कार्यशाला के निर्देशों को लागू करने की समीक्षा भी की गई। काफी बहस के बाद सभी राज्यों के प्रतिनिधियों ने अपनी – अपनी आलोचना की। सभी प्रतिनिधि दस्तावेज में रेखांकित की गई बात पर सहमत हुए कि अगले अधिवेशन से पहले बाकी समय में प्रचार और संगठन पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

सभी प्रतिनिधि, मुख्य रूप से कमजोर राज्यों के प्रतिनिधियों ने महसूस किया कि यह बैठक उनकी कमजोरियों को समझने में बहुत ही लाभदायक रही और उन्होने आश्वासन दिया कि वे आने वाले समय में इन कमजोरियों से बाहर आने का पूरा प्रयत्न करेंगे; उन्होंनें महसूस किया कि सभी अधिवेशनों के बाद ऐसी मध्यावधि समीक्षाएं आयोजित करना बहुत ही आवश्यक है। उन्होनें यह भी महसूस किया कि आइफा को और भी ट्रेड यूनियन कक्षाएं आयोजित करना चाहिए, न केवल हिन्दी भाषी राज्यों में बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी।

बैठक में निर्णय लिया गया कि वे इस वर्ष के अंत तक सभी राज्यों में ऐसी ही मध्यावधि समीक्षाएं करेंगें और जनवरी 2008 के अंत तक राज्य स्तरीय ट्रेड यूनियन कक्षाएं भी आयोजित करेंगे। सितम्बर – अक्टूबर माह में सदस्यता अभियान आयोजित करने और परियोजना अनुसार निर्धारित लक्ष्यों को पुरा करने के लिए सदस्यता अभियान चलाने का भी निर्णय लिया बैठक में 4 लाख की सदस्यता का लक्ष्य भी पुनः दोहराया गया।

बैठक में आंगनवाड़ी कर्मचारियों की मांगों की ओर यूपीए सरकार का रूख; आइफा के प्रतिनिधिमंडल को 3 अगस्त 2006 को स्वयं प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए आश्वासन को भी लागू करने में सरकार

पृष्ठ 16 से
कि हमारी मांग है कि इसे केवल एक योजना के रूप में जारी रखने की बजाय स्थाई सेवा बनाया जाए ताकि हमारे देश के बच्चों का समन्वित विकास हो सके, जोकि अमूल्य मानव संसाधन हैं। हम, आईसीडीएस के लाभार्थी हमारे क्षेत्रों में आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं की प्रशंसा करते हैं, परन्तु हमें यह जानकर बहुत दुःख हुआ है कि उन्हें सरकारी कर्मचारी के रूप में पंजीकृत नही किया गया है, जबकि वे पिछले बहुत वर्षों से इसमें कार्यरत हैं। उन्हें दिए जाने वाला 'वेतन' भी उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाली सेवाओं की तुलना में बहुत कम है। हमें विश्वास करते है कि आईसीडीएस को स्थाई सेवा बनाते हुए आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं की सेवाओं को नियमित करने की आवश्यकता है और सामाजिक सुरक्षा लाभों सहित इनकी संख्या बढ़ाई जानी चाहिए। हमें पूरा भरोसा है कि अतिरिक्त धन जिसकी हमें आवश्यकता है, देश के सालाना बजट का कुल एक प्रतिशत है, और इस देश के बच्चों का विकास करने में आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं और आईसीडीएस के बहुत बड़े हिस्से की तुलना में कम है।

हम, आंगनवाड़ी कर्मचारियों की सही मांगों को पूरा समर्थन देते हैं ओर आपसे इन मांगों को तुरन्त पूरा करने के संबंध में निजी रूप से दखल देने का अनुरोध करते हैं।

हमारी मांगें :–

- **आईसीडीएस को स्थाई बनाया जाए और सभी बस्तियों में एक निश्चित समय सीमा के भीतर आंगनवाड़ी केंद्र खोले जाएं**
- **आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को सभी सामाजिक सुरक्षा लाभों सहित ग्रेड 3 और सहायिकाओं को ग्रेड 4 कर्मचारियों के रूप में नियमित करो**

तब तक

- **आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का वेतन तुरन्त बढ़ाकर 3000रू तथा सेविकाओं को 2000रू प्रतिमाह दिया जाए**
- **वेतन को उपभोक्ता कीमत सूचकांक के साथ जोड़ा जाए**
- **सेवानिवृत्ति पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को एक लाख रूपए तथा सहायिकाओं को पचास हजार रूपए के एक्स ग्रेशिया का भुगतान करें**
- **60 वर्ष की आयु होने पर सेवानिवृत्ति पर पेंशन**
- **सभी आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं को ईपीएफ, ईएसआई कानूनों के तहत कवर किया जाए**
- **आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं के मुद्दों पर एक राष्ट्रीय त्रिपक्षीय कमेटी का गठन किया जाए जिसमें, भारत सरकार, राज्य सरकारों और आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं के ट्रेड यूनियन प्रतिनिधि भी शामिल हों**

की असफलता को भी रेखांकित किया गया। अगले चरण में आईसीडीएस के लाभार्थियों को शामिल कर संघर्ष और तेज करने का निर्णय लिया गया। देश के बच्चों के भोजन, शिक्षा और स्वास्थ्य के अधिकार सुनिश्चित करने में आईसीडीएस की भूमिका पर केंद्रित राज्य एवं जिला स्तरीय कन्वेंशन किए जाऐंगे।

आईसीडीएस के लाभार्थियों में पर्चा वितरण और सामूहिक बैठकें कर एक ज्ञापन पर पूरे देश के आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं और लाभार्थियों के कम से कम 4 करोड़ हस्ताक्षर एकत्र किए जाऐंगें। और आने वाले समय में एक जुलूस का आयोजन किया जाएगा जिसमें सभी राज्यों के आंगनवाड़ी कर्मचारी लाल ड्रेस में होगें और एक विशाल प्रतिनिधिमंडल प्रधानमंत्री को हस्ताक्षरों सहित वह मांगपत्र प्रस्तुत करेगा।

फैडरेशन ने यह भी निर्णय लिया गया कि इस वर्ष के अंत में दिल्ली में आईसीडीएस के महत्व पर केंद्रित एक सेमिनार आयोजित किया जाएगा, जिसमें लाभार्थी संगठनों के नेतृत्वमंडल, बुद्धिजीवियों,, गैर सरकारी संगठनों और बाल अधिकार और भोजन का अधिकार से संबंधित कार्यकर्ताओं को आमंत्रित किया जाएगा।

फैडरेशन की ओर से आइफा अध्यक्षा नीलिमा मैत्रा ने महाराष्ट्र आंगनवाड़ी कर्मचारी संघटना और महाराष्ट्र सीआइटीयू राज्य कमेटी, मेडिकल रिप्रजेंटेटिव्स यूनियन, इंश्योरंस एंपलॉइज़ यूनियन इत्यादि जैसे अन्य संगठनों का बहुत कम समय के नोटिस पर प्रतिनिधियों के आराम से रहने के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं करने, बैठक आयोजित करने, इत्यादी के लिए धन्यवाद अदा किया, जबकि राज्य में यूनियन इतनी मजबूत भी नही है।

समेकित बाल विकास सेवा योजना के लाभार्थियों और आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं की ओर से प्रधानमंत्री के नाम एक खुली चिट्ठी

श्रीमान मनमोहन सिंह जी
माननीय प्रधानमंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली
100011

महोदय,

हम, पूरे देश के, समेकित बाल विकास सेवा योजना के लाभार्थी और आंगनवाड़ी सेविकाएं और सहायिकाएं आपके समक्ष आपके विचारार्थ तथा तुरंत सकारात्मक कदम उठाने के लिए निम्नलिखित मुद्दे रखना चाहते हैं।

समेकित बाल विकास सेवा योजना, जिसका संचालन भारत सरकार के झंडे तले पिछले 32 वर्षो से हो रहा है, और जिसके तहत 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चों का शारीरिक, सामाजिक और मानसिक विकास सुनिश्चित करने के लिए उनके पूरक पोषण, स्वास्थ्य और शिक्षा से संबंधित सेवाएं प्रदान की जाती है, ताकि शिशु मृत्यु दर, मातृत्व मृत्यु दर, अशिक्षा इत्यादी जैसे मानव विकास सूचकांकों में सुधार लाया जा सके। हममें से बहुत से इसके लाभार्थी और बच्चे, यह सेवाएं हमारे गांवों /इलाकों में स्थित आंगनवाड़ी केंद्रों से प्राप्त कर रहे हैं। हमने महसूस किया है कि ये सेवाएं हमें और हमारे बच्चों को लाभान्वित करतीं हैं।

हम महिला एवं बाल विकास विभाग के सर्वेक्षण 'आईसीडीएस के तीन दशक – एक आंकलन' जिसका संचालन एनआईपीसीसीडी ने किया, में रेखांकित किया गया है कि 'बच्चों के जीवनयापन, वृद्धि, सुरक्षा और विकास तथा जहां वे पलते, बढ़ते, विकास करते हैं, उस वातावरण में उनकी सक्रिय भागीदारी' में इस योजना की भूमिका विशेष तौर पर बहुत ही अच्छी है। हम इस अवलोकन से सहमत हैं। आईसीडीएस हम में से बहुत से समाज के पिछड़े वर्गों को सामाजिक और आर्थिक तौर पर लाभान्वित कर रहा है।

हम आंगनवाड़ी केंद्र के लाभार्थी, स्वंय अनुभव और विश्वास करते हैं कि हमारे गावों और इलाकों में आंगनवाड़ी केंद्रों पर कार्यरत सेविकाओं और सहायिकाओं के प्रयत्नों से ही ऐसा संभव हो पा रहा है। हम यह भी मानते हैं कि हमारे देश में बच्चों के भोजन, स्वास्थ्य और शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित करने में आईसीडीएस की महत्वपूर्ण भूमिका है, और इसीलिए उच्चतम न्यायालय ने भारत सरकार को सभी रिहायशी स्थानों पर आंगनवाड़ी केंद्र खोलने निर्देश दिए हैं। इसके दृष्टिगत ही हमारा यकीन है कि यूपीए को अपने राष्ट्रीय न्यूनतम साझा कार्यक्रम में आईसीडीएस को सार्वभेमिकरण करने के लिए आश्वासन देना पड़ा था। यह बहुत ही अफसोसजनक है कि सत्ता में आने के तीन साल बाद भी इस वादे को पूरा नही किया गया है।

हम यह भी मानते हैं कि आंगनवाड़ी केंद्रों द्वारा दी जाने वाली सेवाएं हम सभी को लाभान्वित कर रहीं हैं और इसका महत्व न केवल वर्तमान समय में है बल्कि भविष्य में भी होगा और यह हमारे बच्चों के स्वस्थ भविष्य के लिए आवश्यक है। जैसा

शेष पृष्ठ 15 पर

के हेमलता द्वारा, अखिल भारतीय कामगार महिला समन्वय समिति (सीटू) के लिए, ए–13, राउस ऐवेन्यू, नई दिल्ली से संपादित एवं प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, ए–21, झिलमिल इंडस्टीयल एरिया, जी टी रोड, शाहदरा दिल्ली–95 से मुद्रित